18_girishwar_rumi_done:Layout 1 5/13/2019 2:17 PM Page 307

मौलाना जलालुद्दीन रूमी की सौ ग़ज़लों का मूल फ़ारसी से हिंदी अनुवाद *निःशब्द-नूपुर* का प्रकाशन ईरान सरकार के आर्थिक सहयोग से महात्मा गाँधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा तथा राजकमल प्रकाशन, दिल्ली के संयुक्त तत्त्वावधान में किया गया है। इस पुस्तक की विशेषता यह है कि इसके द्वारा रूमी सम्भवतः पहली बार सीधे फ़ारसी से हिंदी में अनूदित हुए हैं। अनुवाद और प्रस्तुति बलराम शुक्ल की है जो फ़ारसी और संस्कृत के विद्वान हैं। प्रतिमान के पृष्ठों पर बलराम पहले भी रूमी द्वारा मसनवी में किये गये पंचतंत्र के उपयोग पर विस्तृत विमर्श कर चुके हैं।

उन्होंने इस पुस्तक में पहले फ़ारसी ग़ज़लों का देवनागरी में लिप्यंतरण प्रस्तुत किया गया है और तदनंतर उनका हिंदी अनुवाद दिया गया है। अंत में मूल ग़ज़लों को फ़ारसी लिपि में भी रखा गया है। पुस्तक के अंत में दिये गये महत्त्वपूर्ण परिशिष्टों में फ़ारसी काव्य भाषा को समझने के महत्त्वपूर्ण उपकरण जुटाए गये हैं। इसमें ग़ज़लों में प्रयुक्त सभी छंदों को ईरानी तथा भारतीय काव्यशास्त्रीय रीति से गणनिर्देश पूर्वक समझाया गया है, क्लासिकल फ़ारसी कविता के लिए आवश्यक संक्षिप्त फ़ारसी व्याकरण जोड़ा गया है तथा प्रत्येक शब्द का अर्थ भी दिया गया है। इस प्रकार अनुवाद-मात्र न होकर प्रस्तुत पुस्तक रूमी-रीडर के तौर पर काम कर सकने योग्य है।

रूमी सम्पूर्ण विश्व में अपनी आध्यात्मिक कविता मसनवी के कारण अत्यधिक प्रसिद्ध हैं। परंतु उनकी ग़ज़लें मसनवी की अपेक्षा कम प्रसिद्ध हैं। रूमी की *दीवाने शम्स* में संकलित ग़ज़लें ऊर्जस्वी काव्य के दुर्लभ उदाहरणों में से हैं। ये ग़ज़लें सामान्य कविताओं की तुलना में भिन्न क़िस्म की हैं। गज़ल का प्रत्येक शेर अनुभूति की परिपूर्णता से उच्छलित है। प्रेम से आपादमस्तक भरने के बाद ही रूमी ने कविताएँ लिखनी शुरू की थी। उनकी कविता मात्र काव्यात्मक चमत्कारों को प्रदर्शित कर रसिकों को लुब्ध करने तक पर्यवसित नहीं होती। वह हृदय से निकल कर श्रोताओं के मस्तिष्क और मानस को भिगोती हुई आत्मा तक का स्पर्श कर लेती है। सामान्यतः कवियों की पहुँच केवल कविताओं तक ही होती है। वे कविताओं को साध्य मानते हैं। परंतु रूमी के पास कुछ ऐसी वस्तु भी है जिसके

आगे उन्हें अपनी कविताएँ गौण लगती हैं। जब वे कोई ग़ज़ल शुरू करते हैं तो वे उसी रस-सागर से निकले हुए होते हैं, और ग़ज़ल के समाप्त होते-होते वे फिर उसी की याद में विह्वल होने लगते हैं। यही कारण है कि उनकी लगभग अधिकांश ग़ज़लों के अंत में ख़ामोशी और चुप रहने की नसीहत का भाव ज़रूर दिखाई पड़ता है। उनकी उच्चकोटि की रसप्लुत कविता भी उनके महाभाव की निरंतरता में कुछ क्षणों की बाधक ही बनती है। इस प्रेम की परम स्थिति में नख से शिख तक डूबे रूमी जब इहलोक तक वहाँ की थोड़ी भी ख़बर ले आते हैं तो वह हमारे लिए आश्चर्यकारी ही होता है। अनुभूतियों की यह अपरिचित विलक्षणता हमें किसी दूसरे कवि के यहाँ नहीं मिल पाती। इसी कारण रूमी के बारे में प्रचलित है कि वे शाइर नहीं साहिर (जादूगर) हैं। इनकी कविताएँ साहित्यिक उपलब्धि के साथ-साथ आध्यात्मिक साधना की सामग्री भी हैं। वे व्यक्तित्व की परतों को खोलती हैं। उनकी समस्याओं को पहचानती हैं। उनका इलाज सुझाती हैं, और यदि उनका निरंतर मनन किया जाए तो वे हमारा अंतस भी परिवर्तित करती हैं।

रूमी ने आध्यात्मिक नृत्य को भी अपने सम्प्रदाय में सम्मिलित किया था। उनकी ग़ज़लें मुख्यत: दफ की थाप और नै (बाँसुरी) की लय पर गाने के लिए अथवा गाते-नाचते हुए निकली हैं। इस कारण इन ग़ज़लों में जो ऊर्जा, जो प्रवाह, जो संगीतात्मकता अथवा जो लयात्मकता मिलती है वह अन्य किसी भी फ़ारसी कवि के यहाँ दुर्लभ है। इन ग़ज़लों में आंतरिक अंत्यानुप्रास (क़ाफ़िये) का प्रयोग प्रचुर है जिनसे कविता में अभूतपूर्व लयात्मकता आ जाती है। फ़ारसी में इन छंदों को देखें तो ये बहुत ही सुंदर तथा संगीतात्मक प्रतीत होते हैं जबकि उनका अनुवाद करने पर यह प्रभाव स्वभावत: नष्ट हो जाता है। प्रस्तुत संकलन में जानबूझ कर ऐसी ग़ज़लों को अनुवाद के लिए चुना गया है जो कथ्य-प्रधान हैं तथा जिसमें सुंदर तथा उच्च काव्यार्थ की व्यंजना है। इसका प्रमुख कारण यह है कि यह संग्रह हिंदीभाषी पाठकों को रूमी से सीधे-सीधे साक्षात्कार कराने के लिए किया गया है।

संकलन का एक आधार भारतीय पाठक की काव्य-रुचि भी है। फ़ारसी कविता की अनेक काव्य रूढ़ियाँ या प्रचलन ऐसे भी हैं जो भारतीय मानस को विचलित कर सकते हैं। कारण यह है कि काव्य-प्रयोग अथवा उपमानों में बहुत से भाषा-सापेक्ष होते हैं, जो दूसरी भाषा के लिए अजीब भी लग सकते हैं। ऐसी ग़ज़लों की प्रस्तुति से बचा गया है। अन्यथा रसनिष्पत्ति की अपेक्षा रसभंग की आशंका अधिक हो जाती। मौलाना की ग़ज़लों में कई शेर ऐसे हैं जो सुंदर और महत्त्वपूर्ण तो हैं, लेकिन उनमें कई कई अंत:कथाएँ, मिथक तथा ऐतिहासिक संकेत भी मौजूद हैं, जिन्हें जाने बिना उन शेरों को नहीं समझा जा सकता। ऐसी आशंका से बचने के लिए ऐसे शेरों को प्रस्तुत संग्रह में कम से कम ग्रहण किया गया है।

संग्रह को तैयार करने के लिए अनुवादक द्वारा कई तरह के प्रामाणिक तथा मूल फ़ारसी स्रोतों से सहस्राधिक ग़ज़लों का पारायण करने के बाद उनके मध्य से सौ ऐसी ग़ज़लों का चुनाव किया गया है जिनका अनुवाद सम्भव हो सके तथा अनुवाद के बाद वे भारतीय जनमानस के लिए आस्वादन की दृष्टि से उपयुक्त हों। प्रस्तुत संग्रह को रूमी के एक लोकप्रिय संग्रह के तौर पर प्रस्तुत किया जा रहा है तथा इसके प्रकाशन का लक्ष्य यह है कि पाठकों के लिए दुरूह हो कर भार न बन जाए। अत: ऐसी ग़ज़लों से जान बूझ कर बचा गया है जिनमें अरबी तथा ईरानी पृष्ठभूमि की अपरिचित पुराकथाओं अथवा गहन काव्य-रूढ़ियों का प्रयोग किया गया है। यद्यपि इसी तरह के वे शेर जिनका काव्यात्मक मूल्य अधिक है, उन्हें सम्मिलित किया गया है। प्रस्तुत संकलन के 3 विभाग हैं। पहला 'बाबे तलब' (साधन खण्ड), दूसरा 'बाबे तरब' (विभूति खण्ड) तथा तीसरा 'बाबे विसाल' (भरतवाक्य)।

प्रस्तुत संग्रह का स्वागत करते हुए उपर्युक्त पुस्तक से सात गज़लों को हम यहाँ उदाहरण के तौर पर प्रस्तुत कर रहे हैं। सबसे पहले मूल फ़ारसी कविता गणनिर्देश पूर्वक दी गयी है फिर उसका हिंदी अनुवाद।

18_girishwar_rumi_done:Layout 1 5/13/2019 2:17 PM Page 309

हज्ज् ए अकबर[1]

ऐ क़ौमे बे हज रफ़्ते! कुजा ईद कुजा ईद?
मा,शूक़ हमीन् जा,स्त बियाईद बियाईद!!

मा,शूक़े तू हमसाये ए दीवार बे दीवार
दर बादिये सरगश्ते शुमा दर चे हवा-ईद?

गर सूरते बी-सूरते मा,शूक़ बे बीनीद
हम ख़ाजे ओ हम ख़ाने ओ हम का,बे शुमा ईद

दह बार अज़् आन् राह बे दान ख़ाने बे रफ़्ती
यक बार अज़् ईन् ख़ाने बर ईन बाम बर् आईद

आन् ख़ाने लतीफ़-स्त निशानहा-श बेगुफ़्तीद
अज़ ख़ाजे ए आन् ख़ाने निशानी बेनुमायीद

यक दस्ते ए गुल कू? अगर आन् बाग़ बेदीदी-त
यक गौहरे जान् कू? अगर् अज़ बहरे ख़ुदा-ईद

बा ईन् हमे आन् रंजे शुमा गंजे शुमा बाद
अफ़सूस! कि बर गंजे शुमा पर्दे शुमा-ईद

अधमा तीर्थयात्रा च[2]

हज को चल दिये ऐ मेरे क़ौम के यारो! कहाँ-कहाँ भटक रहे हो आख़िर तुम सब?
जिससे तुम्हें प्रेम है— तुम्हारा माशूक़! वह तो यहीं है, जल्दी से लौट आओ! लौट आओ!!

जिसे तुम खोजने चले हो वह तुम्हारा माशूक़ तो हर दरो दीवार का पड़ोसी है।
फिर तुम लोग और किसकी चाह में भटक रहे हो उस रेगिस्तान में?

काश! तुम उस अरूप प्रियतम के रूप को निरख पाते, तो—
जान जाते कि घर के मालिक, घर और का,बा सब तुम्हीं तो हो! तुम्हीं तो हो!!

दसियों बार तुम उस रेगिस्तानी राह से उस घर (=का,बे) तक पहुँचे होंगे।
अब,सिर्फ़ एक बार इस (शरीर के) घर से निकलकर इस (हृदय की) अटारी पर चढ़ आओ।

---

[1] छंद — ऽ ऽ। ।ऽऽ। ।ऽऽ। ।ऽ ऽ.
[2] तीर्थयात्रा धर्म का सबसे प्रारम्भिक साधन है.

18_girishwar_rumi_done:Layout 1 5/13/2019 2:17 PM Page 310

मैंने माना, वह घर (=काबा)बेशक बहुत सुंदर है। तुमने ख़ुद उसकी निशानियाँ भी बयाँ कीं—
लेकिन कभी ऐसा भी तो हो, कि उस घर के स्वामी (ख़ुदा) की भी निशानियाँ बयान करो!

अगर तुमने पूरा बाग़ देख लिया है तो एक छोटे गुलदस्ते की (तुम्हारे लिए) क्या औक़ात?!
अगर तुम सीधा ईश्वरीय सागर से ही सम्बद्ध हो तो प्राण के तुच्छ मोती का तुम्हारे लिए क्या मूल्य?

इन सभी विडम्बनाओं के बावजूद तुम्हारी यह सारी व्यथा तुम्हारे लिए ख़ज़ाना बन सकती है।
लेकिन सबसे अफ़सोस की बात यह है कि इस अकूत ख़ज़ाने पर जो पर्दा पड़ा हुआ है, वह ख़ुद
तुम ही हो।

बी मा[3]

मा रा सफ़री फ़ताद बी मा
आन् जा दिले मा गुशाद बी मा

आन् मह कि ज़े मा निहान् हमी शुद
रुख़ बर रुख़े मा निहाद बी मा

चून् दर ग़मे दूस्त जान् बे दादीम
मा रा ग़मे ऊ बे ज़ाद बी मा

मा ईम हमीशे मस्त बी मै
मा ईम हमीशे शाद बी मा

मा रा म-कुनीद याद हरगिज़
मा ख़ुद हस्तीम यादे बी मा

बी मा शुदे ईम शाद, गूयीम :
ऐ मा कि हमीशे बाद बी मा

पाणी पीवा चंचु बिनु[4]

हम एक ऐसे सफ़र पर चले जिसमें हम ख़ुद ही शामिल नहीं थे।
उस सफ़र पर हमारे दिल हमारे बिना ही खिल उठे थे।

---

[3] छंद — ऽऽ। ।ऽ।ऽ ।ऽऽ.
[4] कबीरदास.

18_girishwar_rumi_done:Layout 1 5/13/2019 2:17 PM Page 311

वह चाँद, जो हमेशा हमसे छिपा रहता था—
उसने जब हमारे होंठों पर अपने होठ रखे, तो हम ही वहाँ नहीं बचे!

जब हमने प्रिय की तड़प में अपने प्राण न्यौछावर कर दिये तो—
उसके ग़म ने हमारे बग़ैर फिर से हमें पैदा किया।

हम हमेशा शराब के बिना मस्त हैं।
हम हमेशा हमारे बग़ैर प्रसन्न हैं।

ऐ लोगो! हमें हरगिज़ याद न करो!
हम ख़ुद ऐसी याद हैं जिसमें हम नहीं हैं।

हम अपने बिना आह्लादित हो गये हैं, और दुआ कर रहे हैं—
ऐ काश! हम हमेशा हमारे बिना रह पाएँ।

आरज़ूस्त[5]

बिन्माइ रुख़ कि बाग़ो गुलिस्तान-म् आरज़ूस्त
बुग्शाय लब कि क़ंदे फ़रावान-म् आरज़ूस्त

ऐ आफ़ताबे हुस्न बुरून् आ दमी ज़े अब्र
का,न् चेह्रे ये मुशअशए ताबान-म् आरज़ूस्त

गुफ़्ती ज़े नाज़ बीश मरंजा मरा, बोरो
आन् गुफ़्तन-त कि बीश मरंजा-म् आरज़ूस्त

व,आन् दफ़अ गुफ़्तन-त कि बोरो, शह बे ख़ाने नीस्त
व,आन् नाज़ बाज़ो तुन्दि ए दरबान-म् आरज़ूस्त

व,ल्लह कि शह्र बी तू मरा हब्स मी शवद
आवारगी ओ कूह् ओ बयाबान-म् आरज़ूस्त

ज़,ईन् हमरहान् ए सुस्त-अनासिर दिल-म् गिरिफ़्त
शीरे ए ख़ुदा व रुस्तम् ए दस्तान-म् आरज़ूस्त

जान-म् मलूल गश्त ज़े फ़िरऔन् ओ ज़ुल्म् ए ऊ

---

[5] छंद— ऽ ऽ।ऽ। ऽ।।ऽ ऽ ।ऽ।ऽ.

18_girishwar_rumi_done:Layout 1 5/13/2019 2:17 PM Page 312

आन् नूर ए रू ए मूसी ए इमरान-म् आरज़ूस्त

ज़्,ईन् ख़ल्क़े पुरशिकायते गिरियान् शुदम मलूल
आन् हायो हूयो ना,रे ए मस्तान-म् आरज़ूस्त

दी शैख़ बा चराग़ हमी गश्त गिर्दे शह्र
क,ज़ दीवो दद मलूल-म् ओ इन्सान-म् आरज़ूस्त

गुफ़्तंद याफ़्त मीनशवद जुस्ते ईम मा
गुफ़्त् आन्कि याफ़्त मीनशवद आन-म् आरज़ूस्त

हरचंद मुफ़्लिस-म् न पज़ीरम अक़ीक़े ख़ुर्द
काने अक़ीक़े नादिरे अर्ज़ान-म् आरज़ूस्त

पिन्हान् ज़े दीदे हा व हमे दीदे हा अज़ूस्त
आन् आशकार-सुन्अते पिन्हान-म् आरज़ूस्त

यक दस्त जामे बादे ओ यक दस्त जा,दे यार
रक़्सी चुनीन् मियाने ए मैदान-म् आरज़ू,स्त

मन् हम रुबाबे इश्क़ी ओ इश्क़-म रुबाबी अस्त
वा,न् लुत्फ़ हा ए ज़ख़्मे ए रहमान-म् आरज़ूस्त

दिल चाहता है

मुझे बाग़ और गुलिस्तान देखने की चाहत है— मुझे अपना मुखड़ा दिखाओ।
मुझे चखने को ढेर सारी मिस्री चाहिए— अपने लबों को खोल दो।

ऐ सुंदरता के सूरज, एक पल के लिए बादलों से बाहर आ जाओ।
मुझे उस चमकदार पुरनूर चेहरे को देखना है।

तुमने कहा था— 'मुझे ज़्यादा परेशान मत करो, यहाँ से जाओ'!
(मैंने कहा-) तुम्हारा यह कहना कि—'मुझे अधिक परेशान मत करो'— मुझे यही चाहिए।

(मुझे) भगाने के लिए दी गयी वह झिड़की कि— 'जाओ मालिक घर पर नहीं हैं'....
तुम्हारे दरबान का वह नाज़ और उसकी वह तेज़ी मुझे फिर सहने का मन है

ख़ुदा की क़सम, तुम्हारे बिना यह शहर मुझे जेलख़ाना लग रहा है।
पहाड़ों और बयाबान की आवारगी करने का मन है मुझे।

इन ढीले-ढाले लोगों की संगति से मेरी जान आजिज़ हो गयी है
मुझे ख़ुदा के शेर (अली) और महायोद्धा रुस्तम जैसे लोगों की इच्छा है।

फ़िरऔन[6] और उसके अत्याचार से मेरा दिल ग़मगीन हो गया है।
इमरान के पुत्र मूसा का नूरानी चेहरा देखने की इच्छा है मुझे।

इन शिक़ायत करने और रोने वालों से मेरा मन उकता गया है।
मस्तों की तरह चहकने वाले लोगों के आहो पुकार की ख़ाहिश है मुझे।

कल दिन में चराग़ लिए मेरा गुरु शहर के चारों ओर चक्कर लगा रहा था। वह कह रहा था—
'मैं अपने सब तरफ़ फैले पशुओं और राक्षसों से दुखी हो चुका हूँ। मुझे मनुष्य की खोज है'

लोगों ने कहा— 'वह (मनुष्य) तो मिलने से रहा। हम लोग भी खोज खोज कर हार चुके हैं'।
उसने जवाब दिया— 'जो चीज़ मिल नहीं सकती, उसी की तलाश है मुझे'।

भले ही मैं ग़रीब होऊँ, लेकिन छोटे मोटे अक़ीक़ पत्थरों से मुझे बहलाया नहीं जा सकता।
मुझे उस अक़ीक़ के खान से ही तृप्ति मिलेगी, जो दुर्लभ तो है लेकिन मिलता बिना किसी मोल के है।
जो सभी आँखों से छिपा है लेकिन सभी आँखें उसी से रौशनी पाती हैं।
वह, जो ख़ुद तो छिपा हुआ है लेकिन जिसकी सृष्टि प्रकट है, मुझे उसी की इच्छा है

एक हाथ में शराब का जाम और दूसरे में महबूब की गुँथी हुई चोटी।
इसी हाल में मैं खुले मैदान में नृत्य करना चाहता हूँ

मैं भी इश्क़ के हाथ का रुबाब हूँ, मेरा इश्क़ रुबाब बजाने वाला है
मुझे ख़ुद पर दयालु परमेश्वर के मिज़राब के चोटों की आरज़ू है।

बी तू बसर न मीशवद[7]

बी हमगान् बसर शवद, बी तू बसर न मीशवद
दाग़े तो दारद ईन् दिल-म् जा ए दिगर न मीशवद
दीदे ए अक़्ल मस्ते तू, चर्ख़े ए चर्ख़ पस्ते तू

---

[6] मिस्त्र का एक अत्याचारी बादशाह जिसे पैग़म्बर मूसा ने हरा दिया था.
[7] छंद — ऽ।।ऽ ।ऽ।ऽ ऽ।।ऽ ।ऽ।ऽ.

18_girishwar_rumi_done:Layout 1 5/13/2019 2:17 PM Page 314

गूशे तरब बे दस्ते तू, बी तू बसर न मीशवद

जान् ज़े तू जूश मी कुनद, दिल ज़े तू नूश मी कुनद
अक़्ल ख़ुरूश मी कुनद, बी तू बसर न मीशवद

ख़म्रे मन् ओ ख़ुमारे मन, बाग़े मन् ओ बहारे मन
ख़ाबे मन् ओ क़रारे मन, बी तू बसर न मीशवद

जाह् ओ जलाले मन तू-ई, मिल्कत् ओ माले मन तू-ई
आबे ज़ुलाले मन तू-ई, बी तू बसर न मीशवद

गाह सू ए वफ़ा रवी गाह सू ए जफ़ा रवी
आने मनी कुजा रवी, बी तू बसर न मीशवद

दिल बेनिहंद बर कनी, तोबे कुनंद बिश्कनी
ईन् हमे ख़ुद तू मी कुनी, बी तू बसर न मीशवद

बी तू अगर बसर शुदी, ज़ीरे जहान् ज़बर शुदी
बाग़े इरम सक़र शुदी, बी तू बसर न मीशवद

गर तू सरी क़दम शवम, व,र तू कफ़ी अलम शवम
व,र बेरवी अदम शवम्, बी तू बसर न मीशवद

बी तू न ज़िंदगी ख़ुशम, बी तू न मुर्दगी ख़ुशम
सर ज़े ग़मे तू चून् बरम, बी तू बसर न मीशवद

हर चे बेगूयम ऐ सनद, नीस्त जुदा ज़े नीको बद
हम तू बेगू बे लुत्फ़े ख़्वद, बी तू बसर न मीशवद

येन जातानि जीवंति[8]

बाक़ी सभी लोगों के बिना गुज़ारा हो सकता है, बस एक तुम्हारे बिना हमारा गुज़ारा नहीं हो सकता।
इस दिल पर तुम्हारी मुहर लग चुकी है। यह और किसी दूसरी जगह जा ही नहीं सकता।

मेरी अक़्ल की आँखें तुमसे मस्त हो चुकी हैं, आसमान का चक्र तुम्हारे सामने झुक चुका है।
उत्सव का कान तुम्हारे हाथ में है, तुम्हारे बिना गुज़ारा नहीं हो सकता।

---

[8] तैत्तिरीय उपनिषद् 3.1.1 (सारे प्राणी जिसके नाते जीते हैं).

18_girishwar_rumi_done:Layout 1 5/13/2019 2:17 PM Page 315

जब तुम नहीं होते हो तो मेरे प्राण उबलने लगते हैं। तुम्हारे साथ रहने पर मेरा दिल उत्सवमग्न हो जाता है।
और बुद्धि शोर मचाती रह जाती है, बताओ तुम्हारे बिना गुज़ारा कैसे हो सके।

मेरे शराब भी तुम हो और नशा भी तुम्हीं, मेरे बाग़ भी तुम्हीं हो और उस बाग़ की बहार भी तुम।
मेरी नींद भी तुम्ही हो और क़रार भी तुम। तुम्हारे बिना गुज़ारा नहीं हो सकता।

मेरी प्रतिष्ठा और ऐश्वर्य तुम्हीं हो, मेरा स्वामित्व और सम्पदा तुम्हीं हो।
मेरे लिए पारदर्शी जीवनदायी जल की तरह हो तुम, तुम्हारे बिना गुज़ारा नहीं हो सकता।

कभी तो तुम वफ़ा करते हो तो कभी जफ़ा (अत्याचार) पर उतर आते हो।
तुम मेरा हिस्सा हो, तुम यह कैसा व्यवहार कर रहे हो, तुम्हारे बिना गुज़ारा कैसे हो सकता है।

जब आशिक़ तुम्हें दिल देते हैं तो तुम उसे लेते नहीं और जब तुमसे तौबा किया जाता है तो तुम उस तौबे को तोड़ देते हो।
ये सारी विरोधी चीज़ें तुम ख़ुद करते हो, बताओ तुम्हारे बिना कैसे जिया जाए।

तुम्हारे बिना अगर जीना पड़ जाए तो सारी दुनिया उलट-पलट हो जाए,
स्वर्ग की वाटिका नरक-निधान हो जाए, क्योंकि तुम्हारे बिना बसर नहीं हो सकता।

अगर तू सर है तो मैं क़दम हूँ, अगर तू हथेली है तो मैं जीत का झण्डा हूँ।
अगर तू कहीं चला गया तो मैं नष्ट हो जाऊँगा क्योंकि तुम्हारे बिना जीना नहीं हो सकता।

तुम्हारे बिना न तो मैं जीते जी ख़ुश हूँ और न ही मरने पर राज़ी।
बताओ तुम्हारी मुहब्बत से मैं दिल को कैसे हटाऊँ जबकि तुम्हारे बिना किसी तरह भी गुज़ारा नहीं हो सकता!

हे परम प्रमाण, जो भी मैंने कहा है वह नेक और बद से ख़ाली नहीं है!
काश, तू भी कृपावश कह उठे— 'तुम्हारे बिना गुज़ारा नहीं हो सकता!'

चे कुनद[9]

गुले ख़ंदान कि नख़ंदद चे कुनद?
अलम् अज़ मुश्क न बंदद चे कुनद?

नारे ख़ंदान् के दहान् बुग्शादे-स्त
चून् कि दर पूस्त न गुंजद, चे कुनद?

---

[9] छंद — ।।ऽऽ ।।ऽऽ ।।ऽ .

महे ताबान् कि बजुज़ ख़ूबी ओ नाज़
चे नुमायद, चे पसंदद, चे कुनद ?

आफ़ताब् अर न दहद ताबिश् ओ नूर
पस दर्ई नादिरे गुम्बद चे कुनद ?

साये अर तलअते ख़ुर्शीद बेदीद
न कुनद सज्दे, नख़ंदद, चे कुनद ?

आशिक़् अज़ बू ए ख़ुशे पैरहन-त
पैरहन रा न दरानद, चे कुनद ?

तने मुर्दे कि बर् ऊ बर्गुज़री
न शवद ज़िंदे, न ख़ंदद, चे कुनद ?

दिल-म् अज़ चंगे ग़म-त गश्त चु चंग
न ख़ुरूशद, न तरंगद, चे कुनद ?

स्वभाव एवैष[10]

खिला हुआ फूल अगर न खिलखिलाए, तो और क्या करे ?
चतुर्दिक् अपने सुगन्ध की पताका न फहराए, तो और क्या करे ?

हँसता हुआ (पका) अनार जिसका मुँह खुल गया है—
—जब वह अपने खोल में न समा पाए, तो इसके अलावा क्या करे ?

चमकता हुआ पूरा चाँद अपने गुणों और सौंदर्य के अलावा—
—क्या दिखाए, क्या पसंद करे, और क्या करे ?

अगर सूरज ताप और प्रकाश न दे—
—तो इस लम्बे चौड़े आसमान पर और क्या करे ?

जब छाया को सूरज का उदय दीख गया—
—तो वह उसे साष्टांग दण्डवत् न करे तो और क्या करे ?

तुम्हारा आशिक़ तुम्हारे कपड़े की ख़ुशबू से मचल कर—

[10] यह तो स्वाभाविक ही है.

18_girishwar_rumi_done:Layout 1 5/13/2019 2:17 PM Page 317

—अपने कपड़े न फाड़ने लगे, तो क्या करे?

वह मुर्दा तन जिस पर तुम गुज़र जाओ—
—वह ज़िंदा होकर हँसने न लग जाए तो और क्या करे?

मेरा दिल तुम्हारे विरह के चंगुल में आकर चंग बन गया है।
अब यह शोर न करे, आवाज़ न करे, तो और क्या करे?

इश्क़ जुम्ले सूद बाद[11]

ऐ ख़ुदा! अज़ आशिक़ान् ख़ुशनूद बाद
आशिक़ान् रा आक़िबत महमूद बाद

आशिक़ान् रा अज़ जमाल-त ईद बाद
जाने-शान् दर आतिश-त चून् ऊद बाद

हर के गूयद कि— 'ख़लास—श देह ज़ इश्क़'
आन् दुआ अज़ आसमान् मरदूद बाद

मह कम् आयद मुद्दती दर राहे इश्क़
आन् कमी ए इश्क़ जुम्ले सूद बाद

दीगरान् अज़ मर्ग मुह्लत ख़ास्तंद
आशिक़ान् गूयंद-नै नै ज़ूद बाद

आसमान अज़ दूदे आशिक़ साख़्ते-स्त
आफ़रीन् बर साहिबे ईन् दूद बा

प्रेमियों के लिए दुआ

हे प्रभु आप प्रेम करने वालों से हमेशा ख़ुश-प्रसन्न रहें!
प्रेमियों का अंत हमेशा भला और प्रशंसित हो।

तुम्हारे सौंदर्य को देख-देख कर आशिक़ों की ईद होती रहे।
तुम्हारी आग में उनके प्राण अगर की तरह सुलगते रहें।

[11] छंद — ऽ।ऽऽ ऽ।ऽऽऽ ।ऽ.

18_girishwar_rumi_done:Layout 1 5/13/2019 2:17 PM Page 318

यदि कोई दयावश उनके लिए प्रार्थना करे कि इनको प्रेम के कष्टों से मुक्ति मिल जाए—
—तो वह दुआ आसमान से टकराकर नीचे लौट आये। स्वीकार ही न हो।

प्रेम के रास्ते में चाँद कुछ मुद्दत के लिए घट भी जाता है।
प्रेम के मार्ग का वह सारा घाटा उसके लिए मुनाफ़ा हो जाए।

दूसरे लोग मौत से थोड़ी मुहलत माँगते हैं।
प्रेमी लोग कहते हैं— नहीं नहीं, मृत्यु बाद में क्यों, अभी आ जाए ना।

आसमान, प्रेमियों के आहों से निकलने वाले धुँए से बना हैं।
जिनके धुँए से यह आसमान बना है उनको शाबाशी हो।